Addressing on the day of Convocation

Dear Vice chancellor and members of Board of Governing Body and my dear graduating students,

It gives me immense pleasure to participate in this convocation of 2017 of the graduating students of Gujarat University. My mind goes back to campus, which has been part of my career for long. I am able to share experience as one of you.

I congratulate all graduating students. I congratulate the parents, teachers and mentors who joined the pursuit of success of these students. More minds join academics today and it's proven that a majority of demography belongs to youth today. But more than minds, it the mind-set that governs today's academic environment.

Today we come across many more terms. Society demands much more from today's youth than it was. Many thumb rules are seen governing our lives. But for success there's no laid down rules except hard work, planning and execution.

I must say all of you are fortunate to be supported by systems and governments to start your career. Stand up India and start up India will lead to make new and progressive India. We witness far reaching changes. Technology has made certain things simple but many more challenging. Then there are surfeit of choices. In our days we had limited choices. In the abundance one has to be all the more careful so one is not drifted into swaying options.

The globalization is here to stay. With globalization one may feel skeptical about the value system, about nationalism and about local growth in global settings. These are very natural queries. But I should say that we're the best blend of custom and modernism.

Even when you leave the campus I am sure teachers keep affecting you. Their impressions are forever. I would say take away with you all that which inspires you and bring novelty into each work of yours:

“You can teach a student a lesson for a day; but if you can teach him to learn by creating curiosity, he will continue the learning process as long as he lives.” Said Clay P. Bedford. I would repeat it adding one more from Helen Keller:

“A well-educated mind will always have more questions than answers.” We have to develop a habit of enquiry. One must not reject something out of ignorance. Same can be said about the Ancient Indian wisdom. Ancient civilization has survived today because of its substance and not because of its propaganda. Any shallow system will itself vanish. So you young minds must put enough efforts to decode the worth of our treatise and scriptures. We cannot forget that we have shown the world the meaning of Vishvavidyalaya. History confirms that there were no less than 10,000 foreign students in Taxila.

Gujarat University has given very noticeable alumni, including our Hon Prime Minister Shri Narendrabhai Modi. Its my core wish that tomorrow many more of you shine and become names to glorify your Alma mater.

You are the people who will take India ahead. In your worldly journey don’t forget the poor, don’t forget the deprived, don’t discriminate and leave aloof the girls and don’t forget that wherever you go you are Indian. India gets affected with each of your actions.

I would like to end with lots of good wishes to all of you and will conclude with these words that Create your own definition of SUCCESS.

All the best.

हिंदी उद्‌बोधन

मंच पर उपस्थित गुजरात विश्वविद्‌यालय के कुलपति डा. एम. एन. पटेल एवं विश्वविद्‌यालय के अन्य पदाधिकारी गण तथा आज के दीक्षान्त समारोह से अपनी पदवी प्राप्त करने वाले प्रिय छात्रगण,

मुझे आज के दीक्षान्त पर्व के सुअवसर पर आपके बीच उपस्थित होने का अत्यंत हर्ष है. आपके साथ साथ मैं भी अपने अतीत के बहुत से क्षणों से प्लावित हो रहा हूँ. अपने जीवन का अधिक समय शिक्षा और शैक्षिक व्यवस्थायों से मैं व्यक्तिगत रूप से जुड़ा रहा हूँ. इसिलिय आपके हर्ष और उत्साह को मैं भी अनुभव कर रहा हूँ.

सर्वप्रथम मैं सभी स्नातकों को अपनी शुभेच्छाएं देना चाहूँगा. आपकी इस यात्रा में आपके माता पिता, अध्यापक और जिन साथियों ने आपका सहयोग दिया उन सभी को मेरी हार्दिक बधाई. आज शिक्षा अल्प समुदायों का विषय नहीं रह गयी है. भारत आज सर्वाधिक युवा आयु वर्ग का देश हो गया है. इस परिपेक्ष में अनेकों विचार यात्राओं और सफलता के सोपान में सबसे अधिक योगदान भी युवाओं का ही है. परन्तु विचारों से अधिक मानसिक बल शैक्षिक वातावरण का निर्माण करने में अधिक सक्षम है.

आज हम हर दिन नयी परिभाषाओं से परिचय करते हैं. समाज आज के युवा से कहीं अधिक अपेक्षाएं रखता है. पुस्तकों में सफलता के अनेक सिध्हांत दिए गए होंगे परन्तु जीवन में सफलता का कोई परिभाषित नियम नहीं है. हर कदम पर मेहनत, योजनाबध्ह कार्य और उसकी काम में परिणति ही सफलता दे सकती है.

आज आप भाग्यशाली हैं की आपका विश्वविद्‌यालय और सरकारें आपके भविष्य के लिए अनेकों योजनायें लाती हैं. Stand up India, start up India और Make in India जैसी अनेकों परियोजना आपके लिए कई कठिनाईयों को कम कर देती हैं. इनका हम दूरगामी परिणाम भी देख रहे हैं. बहुत से कार्य कलापों में तकनीक बदली हैं. आज यदि आप

Technology में updated नहीं हैं तो बहुत जल्द पिछड़ने का डर है. इस कारण से भी हर दिन बदलाव देखने को मिलता है. परन्तु इन सभी परिस्थितियों के ही कारण आज बहुत से अवसर भी उपलब्ध हैं.

प्रिय विद्यार्थियों हमारे समय में बहुत कम और संक्षिप्त अवसर होते थे. आज विविध प्रकार के अवसर जो आपको उपलब्ध हैं, आपके जीवन में असफलता को कम कर देंगे. लेकिन इनमें से सोच समझ कर ही चुनाव करना होगा जिससे मन नहीं भटके और आप समय नहीं गवाएं.

आप सोच रहे होंगे मैं कोई अध्यात्मिक भाषण कर रहा हूँ, परन्तु विश्वास कीजिये मुझे आपके उज्जवल भविष्य की उतनी ही चिंता है जितनी आपके माता पिता या स्वयं आपको है. साथ ही मेरे आपसे बात करने के अवसर बहुत कम आते हैं.

आज के वैश्विक माहौल में स्वाभाविक है आपके मन में कई प्रश्न उठें. शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्तित्व विकास है या उपयोगिता ? यह एक बहुत पुराना वैचारिक संघर्ष है . तैत्रयी में कहा गया " शिक्षा अर्थकरी, यशकरी च सुखकरी" अर्थात शिक्षा से सर्वप्रथम जीविका का प्रबंध हो, उस कार्य से यश मिले और उस यश से हम सुख प्राप्त कर सकें वही सफल शिक्षा है.

आप जो भी गुण यहाँ से अर्जित करके जायेंगे वे सारी उम्र आपके साथ रहेंगे. आपके अध्यापक आपका अंश बनकर आपके विचारों में जीवत रहेंगे. उनकी कुछ अच्छी भी और कुछ विचित्र बातें भी आपकी स्मृति का भाग बनी रहेंगी.

अंग्रेज़ी की यह कहावत बहुत सार्थक सिध्ह होती है: "You can teach a student a lesson for a day; but if you can teach him to learn by creating curiosity, he will continue the learning process as long as he lives." Said Clay P. Bedford. Helen Keller ने भी कहा है :

"A well-educated mind will always have more questions than answers."

हमें कभी भी प्रश्न पूछने से रुकना नहीं है. हमने प्रश्न पूछने और उनके उत्तर ढूँढने बंद कर दिए, इसीलिए आज हम अपने ही ज्ञान को पुरातन और आउटडेटिड कह देते हैं. सभी प्राचीन सभ्यताएं, जो भी आज जीवित हैं उनमें ज्ञान की बड़ी ताक़त रही है. भारत की इसी प्राचीन परंपरा का परिणाम है कि विश्व को विश्वविद्यालय की परंपरा और ज्ञान की अद्भुत थाती से भारतीय सभ्यता ने ही परिचित कराया, इतिहास गवाह है कि तक्षिला में 10,000 विदेशी विद्यार्थी पढ़ते थे. आज आवश्यकता है की आज का युवा पुनः अपने ज्ञान कोषों को अपनी विचार यात्रा का अंश बनाएं.

गुजरात विश्वविद्यालय से अनेक मेधावी व्यक्तित्व समाज में अपना स्थान बना चुके हैं. मैं चाहूँगा की हमारे आज के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र भाई मोदी जैसे , जो कि इसी विश्वविद्यालय से शिक्षित रहे हैं , अनेकों विद्यार्थी समाज में ऊँचाइयों को प्राप्त करें.

आज भारत ही नहीं, पूरा विश्व आपकी प्रतीक्षा कर रहा है. अपनी जीवन यात्रा में आप कभी उस गरीब को अनदेखा न करें जो कहीं आपके घर के पास हो, किसी दूखी को असहाय न छोडें, अपने समाज की कन्याओं को जीवन, आदर और सुरक्षा दें और जहाँ कहीं भी हों हमेशा याद रखें कि आप सर्वप्रथम भारतीय हैं.

प्रिय छात्रों,आपके हर कार्य से भारत प्रभावित होता है. आपकी सफलता भारत की सफलता है और आपकी असफलता से देश को पीड़ा होती है. मैं भी उसमें शामिल हूँ.

आप एक उज्जवल भविष्य ले कर आगे बढें और अपनी गरिमा से अपनी सफलता की कहानी लिखें यही मेरा आशीर्वाद हैं.